तमसो मा ज्योतिर्गमय

हिन्दी भाषा, साहित्य एवं भारतीय संस्कृतिः वैश्विक परिदृश्य

हिन्दी साहित्य के विविध आयाम : वैश्विक परिदृश्य

संपादक मंडल

राजेश अग्रवाल, डॉ. डी. विद्याधर, डॉ. सुषमा देवी

डॉ. डी. जयप्रदा, डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

भाषा, साहित्य एवं भारतीय संस्कृति : वैश्विक परिदृश्य

हिंदी साहित्य के विविध आयाम : वैश्विक परिदृश्य

संपादक मंडल

राजेश अग्रवाल, डॉ.डी.विद्याधर, डॉ.सुषमा देवी, डॉ.डी.जयप्रदा, डॉ.सुरेश कुमार मिश्रा

प्रकाशक

मिलिन्द प्रकाशन

4-3-178/2, कन्दास्वामी बाग
हनुमान व्यायामशाला की गली
सुल्तान बाजार
हैदराबाद -500095
फोन : 24753737 / 32912529

अक्षर संयोजक

डॉ.सुरेश कुमार मिश्रा
7386578657

आवरण

वी.डिजाइन
फोन : 98855 06088

प्रथम संस्करण

2019

मूल्य

रु.825/-

(रुपये आठ सौ पच्चीस मात्र)

ISBN : 978-81-905891-5-5

HINDI SAHITYA KE VIVIDH AYAM : VAISHVIK PARIDRISHYA

Editors

Rajesh Agrawal, Dr.D.Vidyadhar, Dr.Sushma Devi, Dr.D.Jayaprada, Dr.Suresh Kumar Mishra

39. वैश्वीकरण के संदर्भ में संघर्षरत नारी सुरेखा	प्रो. एस.वी.एस.एस.नारायण राजू	211
40. राकेश वत्स के उपन्यासों में दलितों की संघर्ष–चेतना	डॉ.कुमार नागेश्वरराव	216
41. हिन्दी कथा साहित्य में व्यक्त नारी चेतना	डॉ.पवन नागनाथराव एमेकर	221
42. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में दलित जीवन की वास्तविकता को चित्रित करती कहानियाँ	डॉ. मिलिंद सालवे	225
43. हिन्दी में नाटक और रंगमंच का विविध प्रयोग	डॉ. रेखा शर्मा	234
44. हिन्दी उपन्यास : सांस्कृतिक सन्दर्भ	डॉ. श्यामराव राठोड़	241
45. शुरुआती हिन्दी उपन्यासों में निहित समाज सुधार की झलक	डॉ जीतेंद्र प्रताप	252
46. लोक साहित्य में लोक गीतों का महत्व	डॉ. अरूण हेरेमत	259
47. उषा प्रियंवदा के उपन्यास में नारी के बदलते विवाह परिवेश-वैश्विक परिप्रेक्ष्य में	डॉ. सफ्रम्मा	263
48. राग दरबारी की भाषा और यथार्थ	डॉ. एम. आंजनेयुलु	269
48. 21वीं सदी का हिन्दी नाटक-उत्तर-आधुनिकता	एम. रामचंद्रम	273
49. हिन्दी समाचार-पत्रों में प्रकाशित राजनैतिक समाचार शीर्षकों का भाषाई स्वरूप	डॉ. मु. अफसर अली राईनी, दानिश खान	285
50. ध्रुवस्वामिनी नाटकः आधुनिक जीवन परिदृश्य	डॉ. डी. अनंतलक्ष्मी	293
51. समकालीन हिन्दी कहानियों में बदलते मानवीय संबंध	डॉ. नागलगिद्दे मारूति	296
52. आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मानवीय चेतना	डॉ.के.पद्मा रानी	302
53. मॉरीशस के साहित्यकारों का विश्व हिंदी में योगदान	डॉ. मीना सिंह	307
54. विदेशी हिन्दी कहानियों के विभिन्न दृष्टिकोण	डॉ. टी. अरुण कुमारी	314
55. अंतिम दशक के हिन्दी नाटकों में सामाजिक चेतना	डॉ. माधवी	320
56. हिन्दी उपन्यास : विविध संदर्भ	डॉ.जी.एच.नीता	325

लोक साहित्य में लोक गीतों का महत्व

- डॉ. अरूण हेरेमत

लोकगीत ही किसी भी भाषा या प्रदेश का सच्चा प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, क्योंकि वे जनसाधारण के मुख से बिना किसी शास्त्रीय आधार के अविरल एवं प्रामाणिक रूप से बहनेवाली शब्दगंगा होते हैं, जिसमें सच्चाई एवं वास्तविक चित्रण होता है। लोकगीत वे गीत होते हैं जो सर्व साधारण समाज की मौखिक रूप में भावमय अभिव्यक्ति कराते हैं। किसी भी भाषा के साहित्य का मूल्यांकन करना हो तो उस भाषा के लोकसाहित्य का मूल्यांकन करना अनिवार्य होता है। बिना लोकयसाहित्य के साहित्य निष्प्राण लगता हैं।

श्याम परमार : लोकगीत लोकसाहित्य का ही गीत प्रधान अंग है जिसका उद्भव नगर और ग्राम के संयुक्त साधारण जन के मध्य होता है।

हिन्दी साहित्य कोश : हिन्दी साहित्य कोश में लोक प्रचलित गीत, लोकनिर्मित गीत तथा लोकविषय गीत ये तीन अर्थ देते हुए कहा गया है - श्लोकगीत तो वह प्रकार है, जिसको ऐसे किसी व्यक्तित्व से संबंधिक नहीं किया गया जा सकता, जिसकी मेधा लोकमानस की स्वाभाविक मेधा नहीं है।

महात्मा गांधी : ये गीत जनता का साहित्य है, सच पुछो तो लेकगीत ही जनता की भाषा है। लोकगीतों की परिभाषाएँ देते हुए मराठी विश्वकोश में लिखा गया है - श्मौखिक परंपरेने चालत आलेल्या अनेकविध गीत प्रकारांचा निर्देश या संज्ञेने केला जातो. सर्व लोकसाहित्य प्रमाणे लोकगीते ही समूह मनाची व समूह प्रतिभेची निर्मिती आहे. निसर्गाच्या लयबध्दतेशी व तालबद्धतेशी संवाद साधितच ही गीत निर्मिती झाली.

महात्मा गांधीजी लोकगीतों को जनता का साहित्य मानते हुए कहते है कि लोकगीत ही जनता की भाषा है। वे मानते है कि वही काव्य और वही साहित्य स्थायी रहता है, जिसे लोग सुगमता से पा सकते है, आसानी से पचा सकते है। ऐसा ही साहित्य लोकसाहित्य है।

पंडित हजासी प्रसाद द्विवेदी जी लोकगीत को ग्रामगीत कहते है। वे ग्रामगीत को सौंदर्य तक ही सीमित नहीं मानते बल्कि उनका कार्य भी

मानते हैं। उनके अनुसार लोकगीतों का निर्माण आर्यों के आगमन से पहले हुआ हैं।

लोकसाहित्य विशारदों की परिभाषाओं के आधार पर निष्कर्षत: कहां जा सकता है कि, श्लोकगीत उन गीतों को कहते है, जो सामान्य जनों में जन्मे पले बढे हो, जिसके वर्ण्य विषय व्यापक हो, जो मौखिक परंपरा के सहारे सदियों से चले आ रहे हो, जिसमें लोक के दिलों की निश्चल अभिव्यक्ति हो, जो बोली भाषा में अनामिक कर्ता द्वारा रचे गए हो।

लोकगीतों की परंपरा अत्यंत प्राचीन एवं व्यापक है। विश्व की प्रायः हर जाति और क्षेत्र में लोकगीत पाए जाते है। भाषा एवं स्थानीय प्रभाव के बाहय आवरण को हटाकर यदि देखा जाए तो इन लोकगीतों में आश्चर्य जनक साम्य दृष्टिगोचर होता है। इन गीतों में एक प्राणसूत्र है, एक स्पंदन है।

भारत में लोकगीतों का बीज हमारे सबसे प्राचीन तथा पवित्र ग्रंथ ऋग्वेद में पाया जाता है। प्राचीन साहित्य में पाये जाने वाले गाथा ही लोकगीत है। पद्य या गीत के अर्थ में गाथा शब्द का प्रयोग ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में उपलब्ध होता है।

प्रकृतान्यृजीषण : कण्वा इंद्रस्य गाथया। मदे सोमस्य बोचत। तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत, उतो कृवंत धोतयों देवानां नाम विभ्रतिः।

गानेवाले के अर्थ में ष्गाथिन्ष् शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर मिलता है।

इंद्रमिदं् गाथिनो बृहदिंद्रमर्केभिकिणः। इंद्रं वाणीरनूषत।

श्री राम जन्म के अवसर पर गांधर्वों व्दारा गाने तथा अप्सरोओं व्दारा नाचने का उल्लेख वाल्मिकिय रामायण में इस प्रकार किया गया है -

जगुः कलं च गंधर्दाः ननृतुय्वाचाप्सरो गणाः, देयदुन्दुभयो नेदुः पुष्पवृष्टिश्य खात्पतत्।

तुलसी का ष्जानकी मंगलष् तथा ष्पार्वती मंगलष् लोकगीतों के लिए प्रसिद्ध है। रामचरितमानस में भी तत्कालीन लोकगीतों का वर्णन है। भगवान राम के जन्म के समय स्त्रियों द्वारा गीत गाने का उल्लेख गोस्वामीजी ने किया है।

गावहिं मंगल मंजुल बानी।
सुनी कलरव कलकंठ लजानि।

तुलसी दास जी ने सोहर छंद में प्रामललानहछुष् की रचना कर लोकगीतों की महत्ता भी प्रतिपादित की है। सूरसागर की रचना के मूल स्त्रोत वे लोकगीत तथा लोकगाथाएँ ही रही हैं, जो राधा और कृष्ण की प्रेमलीला के संबंध में ब्रजमंडल में गाई जाती थीं। इसके साथ ही सूरदास ने लोकछंदों को भी ग्रहण किया है। इस प्रकार भारतीय लोकगीतों की टूटी परंपरा का अखंड विकसित रूप मध्ययुगीन साहित्य में स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो जाता हैं।

श्री रामनरेश त्रिपाठी जी कहते है कि, हिन्दी में जितनी कहावतें एवं मुहावरें प्रचलित है प्रायः सब गाँवों की बोली से आये हुए हैं। यह उसका एक बडा ऋण है, जिसे हिन्दी कभी उऋण नहीं हो सकती।

राहुल सांकृत्यायन का मत है कि हिन्दी साहित्य के निर्माण में लोकसाहित्य ने आधारशीला का कार्य किया है। डा. ग्रियर्सन ने भोजपुरी लोकगीतों के संबंध में अपना जो विचार प्रकट किया है वह लोकगीतों की महत्ता प्रकट करता है। वे कहते है कि लोकगीत उस खान के समान है जिसके खोदने का कार्य अभी प्रारंभ ही नहीं हुआ है। यदि इन गीतों का प्रकशन किया जाय तो इनकी प्रत्येक पंक्ति में ऐसी बहुमूल्य सामग्री उपलब्ध होगी जिससे भाषा शास्त्र संबंधी अनेक समस्याएँ सुलझाई जा सकती है।

किसी भी देश के जीवन में लोकसाहित्य की विशेष महत्ता होती है। सच ता यह है कि लोक की वास्तविक संस्कृति उसके मौखिक साहित्य में निहित होती है। लोकसाहित्य में धर्म, समाज तथा सदाचार संबंधी बहुमूल्य सामग्री भरी पडी है। इसके साथ ही स्थानीय इतिहास तथा भूगोल संबंधी सामग्री भी उपलब्ध होती है। भाषाविज्ञानवेत्ता के लिए तो यह साहित्य अगाध रत्नाकर के समान है, जिसमें गोता लगाकर अनेक अनमोल मोती प्राप्त किए जा सकते हैं।

लोकजीवन का जितना सहज एवं यथार्थ चित्रण मिलता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। लोकजीवन को यदि समीप से पढना है तो लोकगीतों के खुले पृष्ठों से अधिक महत्वपूर्ण सामग्री अन्यत्र प्राप्त नहीं हो सकती। जनता का धर्म, आस्थाएँ, नैतिकता, रहन-सहन, जीवन को समझने, सोचने और जीने का ढ़ग, जीवन के शाश्वत मूल्य अर्थात उसकी सारी संस्कृति का प्रतिबिंब लोकगीतों के दर्पण में उभर आता हैं। अतः लोकगीत लोकजीवन का महत्वपूर्ण पृष्ठ है, जो आने वाले हर युग के लिए बहुमूल्य दस्तावेज सिद्ध होता है।

संदर्भ सूची :

1. भारतीय लोकसाहित्य - डा. श्याम परमार पृ. 73
2. हिन्दी साहित्यकोश- सं.डा. धीरेंद्र वर्मा तथा अन्य पृ. 689
3. बृहत् हिन्दी कोश, ज्ञानमंडल, बनारस पृ. 1175
4. ऋग्वेद 9/99/4
5. ऋग्वेद 1/7/2
6. वाल्मिकी रामायण (बालकांड) डी. एच. भट्टड व्दारा सटीक पृ. 122
7. ग्रामसाहित्य भाग (1) रामनरेश त्रिपाठी पृ. 59
8. हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास स राहुल सांकृत्यायन षोडश भाग, पृ. 15

विभाग अध्यक्षा,
एल. वी. डी. कॉलेज,
रायपूर, कर्नाटक राज्य

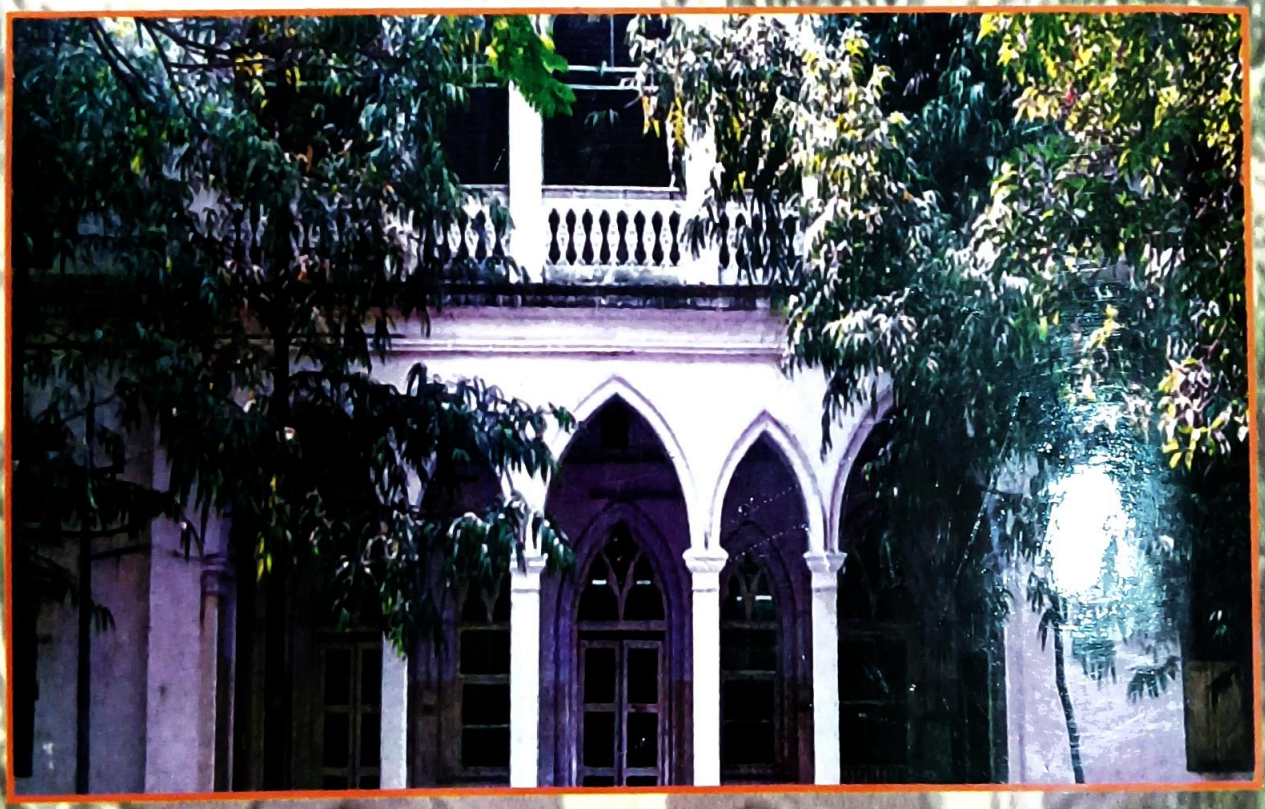

मिलिन्द प्रकाशन, हैदराबाद, भारत.